राष्ट्रीय एकता के मार्ग में बाधाएं

(PROBLEMS OF NATIONAL INTEGRATION)

प्रो. एम. एन. श्रीनिवास लिखते हैं कि विभाजनकारी प्रवृत्तियां आज भी अस्तित्व में हैं और भविष्य में कई वर्षों तक बनी रहेंगी। देश की अधिकांश जनता के लिए "भारत एक नयी कल्पना है और इस कल्पना के सत्य रूप होने में कुछ समय लगेगा। भारत की राष्ट्रीय एकता के मार्ग में प्रमुख बाधाएं इस प्रकार हैं

1 जाति प्रो. श्रीनिवास के अनुसार, "कोई भारत में कहीं भी रहे वह जाति के संसार में ही रहता है। हमारे देश में जातियां धार्मिक विभाजनों को भी काटती हैं। केवल हिन्दू ही जातियों में बंटे हुए नहीं हैं अपितु जैन, मुस्लिम, सिख और ईसाई भी अनेक जातियों में विभाजित हैं। उच्च जातियों ने अपने श्रेष्ठत्व की भावना को नहीं छोड़ा है। प्रभावशाली जातियों के हाथ में अधिकाधिक शक्ति सिमट रही है और ये लोग दलित जातियों द्वारा ऊपर उठने के प्रयत्नों का विरोध कर रहे हैं। इसके फलस्वरूप देश के विभिन्न भागों में अन्तर्जातीय तनाव बढ़े हैं। गांवों में प्रभावशाली जातियों और दलितों में झगड़े होते ही रहते हैं। हमारे ग्रामीण अंचलों में आज भी हरिजन अछूत हैं। राजनीतिक दलों ने जातियों के संगठन का उपयोग चुनावों में करना प्रारम्भ कर दिया है। बिहार में चुनावों में जबरदस्त जातीय प्रतिद्वन्द्विता दिखायी देती है और वहां का प्रत्येक चुनाव राजपूत भूमिहर कायस्थ और पिछड़ी जातियों के इर्द-गिर्द घूमता है। तमिलनाडु में ब्राह्मणवाद और गैर-ब्राह्मणवाद, आन्ध्र में रेड्डी और काम्मा कर्नाटक में लिंगायत और वोक्कालिंगा का संघर्ष सर्वत्र छाया हुआ है। जातिवाद से यह भावना बलवती हुई है कि दूसरी जातियां निम्न स्तर की होती हैं और उनकी उपेक्षा की जानी चाहिए। चुनावों में जातीय द्वेष व वैमनस्य बढ़ा है और वातावरण गन्दा हुआ है। जातीय भावना के कारण प्रत्येक गांव विभाजित-सा प्रतीत होता है। मंडल रिपोर्ट के क्रियान्वयन के मुद्दे पर पिछले वर्षों में भयंकर जातीय संघर्ष हुए जिनमें अनेक छात्रों ने आत्मदाह किया जातिभेद लोकतन्त्र के आदर्श एकता और समता के प्रतिकूल है और आपस में द्वेष-वैमनस्य बढ़ाने वाला है। जातीय भेद संकीर्णता का द्योतक है. जातीय मतभेदों से गुटबन्दी बढ़ती है, पक्षपात की भावना बढ़ती है और कभी-कभी आन्दोलन भी होते हैं। तमिलनाडु में गैर-ब्राह्मणों ने उच्च जातियों के विरुद्ध कई बार संगठित रूप से आन्दोलन किए हैं।

2. साम्प्रदायिकता साम्प्रदायिकता एक निम्नकोटि की विभाजनात्मक प्रवृत्ति है। इसने हमारे देश का बड़ा अहित किया है। साम्प्रदायिकता के कारण ही देश का विभाजन हुआ। बाद में हमने पंथनिरपेक्ष राज्य का सिद्धान्त अपनाया और यह दृष्टिकोण अपनाया कि भारत में सभी धर्मों को समान रूप से फलने-फूलने का अधिकार है। आज भी देश में अनेक सम्प्रदायनिवास करते हैं— हिन्दू, मुसलमान, सिख, ईसाई, आदि। कभी-कभी मामूली-सी घटना को लेकर साम्प्रदायिक दंगे हो जाते हैं। स्थानीय झगड़ों के कारण हिन्दू मुस्लिम विद्वेष भी भड़क उठता है।

सन् 1967 में उत्तर प्रदेश के छोटे-छोटे नगरों में हिन्दू-मुसलमानों के झगड़े हुए। सन् 1979 में इनसे ज्यादा गम्भीर दंगे अहमदाबाद और गुजरात में हुए जिनमें कई सौ आदमी मारे गए और काफी लूटपाट व आगजनी हुई। सन् 1978-79 में अलीगढ़ व जमशेदपुर में साम्प्रदायिक दंगे हुए और काफी संख्या में लोग मारे गए। सन् 1985 में अहमदाबाद में दंगे हुए। 17 से 23 मई 1987 के दौरान मेरठ में भयानक साम्प्रदायिक दंगा भड़क उठा और अनेक लोग मारे गए। उर्दू विरोधी प्रदर्शन तथा उसके प्रतिरोध के कारण बदायूं में 29 सितम्बर, 1989 को साम्प्रदायिक हिंसा भड़क उठी। हाल के वर्षों में राम जन्मभूमि-बाबरी मस्जिद विवाद ने अनेक स्थानों पर साम्प्रदायिक हिंसा को फैलाने में आग में घी डालने का कार्य किया। मार्च-अप्रैल 2002 में गुजरात साम्प्रदायिक हिंसा से ग्रस्त रहा है और सैकड़ों जानें गयी। हमारे राजनीतिक दल इस डर से साम्प्रदायिकता का विरोध करने से बचने की कोशिश करते हैं कि वे दूसरे सम्प्रदायों के वोट खो देंगे और वे स्थानीय झगड़ों को साम्प्रदायिक तूल देना शुरू कर देते हैं। साम्प्रदायिकता लोकतन्त्र का कलंक और राष्ट्रीय एकता को नुकसान पहुंचाती है।